चिरायता

चिरायता (*Swertia cordata*) बवतकंजं हिमालय के पहाड़ों में लगभग 1200 से 3000 मीटर की ऊंचाई तक हिमाचल प्रदेश, जम्मू–कश्मीर, उत्तरांचल तथा पूर्वोतर के राज्यों में पाया जाता है। चिरायते का पौधा लगभग 2 फीट ऊंचाई का होता है। इसके पत्ते गहरे हरे तथा फूल की पंखुड़ियां सफेद रंग की होती हैं। पौधों में फूल जुलाई–अगस्त के महीनों में लगते हैं। बीज बहुत ही सुक्ष्म होते हैं और अक्तूबर महीने में पक कर तैयार होते हैं।

भूमि का चयन

चिरायते की खेती रेतीली दोमट मिट्टी में कार्बनिक पदार्थ के साथ आसानी से की जा सकती है। खेतों में अधिक पानी खड़ा नहीं होना चाहिए। पौधे की अधिक पैदावार के लिए खेती नमीदार व कम धूप वाले खेतों में की जानी चाहिए।

खेती की तैयारी व बीजाई

चिरायते के लिए खेतों की जनवरी–फरवरी में एक–दो बार अच्छी तरह से जुताई करनी चाहिए। जुताई किए खेतों को 20–25 दिनों तक खुला छोड दें। फरवरी के अन्त में खेतों में केंचुए की खाद (4000 कि.ग्रा./हेक्टेयर) डालकर 10सें.मी. ऊंची, 90सें.मी. चौडी क्यारियां बनाएं। क्यारियों के बीच में 20–25 सें.मी. चौड़ी नालियां पानी के निकास के लिए बनाएं। चिरायते का बीज बहुत ही सूक्ष्म होता हैं। एक ग्राम बीज में लगभग 10000–12000 बीज होते हैं। पौधों की अच्छी उपज के लिए पौधों के बीच में लगभग 10–12 सें.मी. की दूरी होनी चाहिए। चिरायते के बीज को बीजाई से पहले 12–15 घंटों तक पानी में भिगोया जाता है। भिगोए हुए बीज को केंचुए की खाद के साथ टोकरी में मिलाया जाता है। (4ग्राम बीज को 4 कि.ग्रा. केंचुए की खाद में मिलाया जाता है।) केंचुए की खाद में मिलाए बीज को खेत की क्यारियों में बिजाई के लिए छिड़का जाता है। बिजाई के उपरांत क्यारियों पर बारीक मिट्टी का हल्का छिडकाव किया जाता है। किसी भी प्रकार के रासायनिक खाद व कीटनाशक का प्रयोग इस फसल में वर्जित है। इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है।

निराई एवं गुडाई

बीजाई के लगभग 4–5 महीनों के बाद जुलाई–अगस्त माह में बीज उगता है। खरपतवार को 2–3 बार उखाड कर क्यारियों को साफ रखना अति आवश्यक होता है।

कटाई

चिरायते का पौधा जुलाई–अगस्त माह में उगने से लेकर अगले वर्ष फरवरी–मार्च महीनों तक क्यारियों में हरी–हरी पतियों के रूप में रहता है। जैसे–2 गर्मी बढ़ती है, पौधा भी लम्बा होने लगता है। जुलाई–अगस्त माह में पौधा लगभग दो फुट ऊंचाई तक पहुँच जाता है। इम समय पौधे पर सफेद रंग के फूल आने लगते हैं। पौधे की कटाई इस अवस्था में होनी चाहिए। बीज के लिए कुछ पौधों को खेत में छोड़ देना चाहिए जिन्हें अक्तूबर माह में बीज पकने के बाद काटा जाना चाहिए। पौधों की कटाई पौधों को उखाड़कर की जाती है क्योंकि पौधे के साथ जड़ों

का भी औषधी बनाने में प्रयोग किया जाता है।

सुखाना एवं भण्डारण

काटी हुई फसल को धूप में सुखाया जाता है। अच्छी तरह से सूखने के बाद पौधों को छोटे–छोटे गुच्छों में बांध दिया जाता है और बेचने के लिए दवा–कम्पनियों तथा बाजार में खरीददारों को भेजा जाता है।

उपज

अच्छी फसल होने पर 1 हैक्टेयर में लगभग 12–15 क्विण्टल चिरायते की सूखी उपज होती है। बाजार में इसका दाम 30,000 रूपये प्रति क्विण्टल है। चिरायते की फसल को बिजाई से लेकर कटाई तक लगभग 18 माह का समय लगता है।

फसल की गुणवता

चिरायते के पौधों में लगभग 40 प्रकार के औषधीय तत्व पाये जाते हैं। मुख्यतः अमैरोजैन्टीन व स्वर्शियोएमारीन प्रमुख तत्व गुणवता के लिए माने जाते हैं। गुणवता की जांच विभिन्न संस्थानों में करवाई जा सकती है। फसल के गुणवता प्रमाण पत्र के साथ किसानों को फसल बेचने में आसानी होती है और भाव भी अच्छा मिलता है। किसान अपनी फसल सीधे दवा कम्पनियों को बेच सकते हैं। इसके लिए फसल तैयार होने से पहले कम्पनियों से अनुबंध करना फायदेमंद रहता है। चिरायता पौष्टिक–औषधि, कब्ज, खांसी, बुखार, त्वचा रोग और पेट के कीडों के उपचार की औषधियों में प्रयोग किया जाता है।

आर्थिक लाभ

आय

कुल उपज प्रति हेक्टेयर	–	15 क्विण्टल
मूल्य प्रति क्विण्टल	–	30,000 रूपये
कुल आय/हैक्टयर	–	4,50,000 रूपये

व्यय

300 ग्राम बीज	–	45,000 रूपये
अन्य खर्च	–	55,000 रूपये
कुल व्यय/हैक्टयर	–	1,00,000 रूपये
शुद्ध लाभ/हैक्टयर	–	3,50,000 रूपये

(18 – महीनों में)

बाजार के भाव समय–समय पर बदलते रहते हैं। शुद्ध लाभ के आंकडे वर्तमान बजार भाव पर आधारित है।

अधिक जानकारी हेतू इस पते पर संम्पर्क करें:–

मुख्य परियोजना निदेशक, JICA सहायता प्राप्त 'हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना', टुटू, शिमला–171011 हिमाचल प्रदेश

दूरभाषः 0177–2838217, ई–मेलःcpdjica2018hpfd@gmail.com,

वेबसाइटः https://jicahpforestryproject.com